

४९. गन्धर्वसेनायाः कथा

सर्वसौख्यप्रदं नत्वा पादद्वैतं जिनेशिनः। वक्ष्ये गन्धर्वसेनायाश्चरित्रं मूढचेतसः ॥१॥
 पुरे पाटलिपुत्राख्ये राजा गन्धर्वदत्तकः। राज्ञी गन्धर्वदत्ताभूतयोः पुत्री बभूव च ॥२॥
 नाम्ना गन्धर्वसेनासौ नाना गान्धर्वशास्त्रवित्। यो जयत्यत्र मां धीरो लसद्गन्धर्वविद्यया ॥३॥
 स मे भर्ता भवत्येव नान्यथेति प्रगर्विता। प्रतिज्ञां च समादाय क्षत्रियाञ्जयति स्म सा ॥४॥
 श्रुत्वा तां वार्त्तिकां धीमान्योदनाख्यपुरात्स्वयम्। युतः पञ्चशतैश्छात्रैः पांचालस्तत्कलाचणः ॥५॥
 उपाध्यायः समागत्य वादार्थी परया मुदा। तत्र पाटलिपुत्रस्य स्थित्वोद्याने मनोहरे ॥६॥
 समायात यदा कोपि सूचनीयः स मे ध्रुवम्। इत्युक्त्वाशोकवृक्षाधः सुप्तोसौ छात्रकान्प्रति ॥७॥
 पुरं दृष्टुं गतास्तेऽपि छात्रकाः कौतुकात्तदा। तत्र गन्धर्वसेना सा वीक्षितुं तं समागता ॥८॥
 पृष्ट्वा छात्रं च तन्नाम दृष्ट्वा तं निद्रयाश्रितम्। वीणासमूहमध्यस्थं लालालिप्तमुखाम्बुजम् ॥९॥

४९. गन्धर्वसेना की कथा

सब सुखों के देने वाले जिनभगवान् के चरणों को नमस्कार कर मूर्खिणी गन्धर्वसेना का चरित लिखा जाता है। गन्धर्वसेना भी एक विषय की अत्यासक्ति से मौत के पंजे में फँसी थी ॥१॥

पाटलिपुत्र (पटना) के राजा गन्धर्वदत्त की रानी गन्धर्वदत्त के गन्धर्वसेना नाम की एक कन्या थी। गन्धर्वसेना गानविद्या की बड़ी जानकार थी और इसीलिए उसने प्रतिज्ञा कर रखी थी कि जो मुझे गाने में जीत लेगा “वही मेरा स्वामी होगा, उसी की मैं अंकशायिनी बनूँगी।” गन्धर्वसेना की खूब सूरती की मनोहारी सुगन्ध की लालसा से अनेक क्षत्रियकुमार भौंरे की तरह खिंचे हुए आते थे, पर यहाँ आकर उन सबको निराश-मुँह लौट जाना पड़ता था। गन्धर्व सेना के सामने गाने में कोई नहीं ठहर पाता था ॥२-४॥

एक पांचाल नाम का उपाध्याय गानशास्त्र का बहुत अच्छा अभ्यासी था। उसकी इच्छा भी गन्धर्वसेना को देखने की हुई वह अपने पाँच सौ शिष्यों को साथ लिए पटना आकर एक बगीचे में ठहरा। समय गर्मी का था और बहुत दूर की मंजिल तय करने से पांचाल थक भी गया था। इसलिए वह अपने शिष्यों से यह कहकर, कि कोई यहाँ आए तो मुझे जगा देना, एक वृक्ष की ठंडी छाया में सो गया। इधर वह सोया और उधर इसके बहुत से विद्यार्थी शहर देखने को चल दिये ॥५-८॥

गन्धर्वसेना को जब पांचाल के आने और उसके पाण्डित्य की खबर लगी। वह इसे देखने को आई उसने उसे बहुत-सी वीणाओं को आस-पास रखे सोया देखकर समझा कि वह विद्वान् तो बहुत भारी है, पर जब उसके लार बहते हुए मुँह पर उसकी नजर गई तो उसे पांचाल से बड़ी नफरत हुई उसने फिर उसकी ओर आँख उठाकर भी न देखा और जिस झाड़ू के नीचे पांचाल सोया हुआ था। उसकी चन्दन, फूल वगैरह से पूजा कर वह उसी समय अपने महल लौट आई। गन्धर्वसेना के जाने के बाद जब पांचाल की नींद खुली और उसने वृक्ष को गंध-पुष्पादि से पूजा हुआ पाया तो कुछ

तत्रारुचिं विधायोच्चैर्गन्धपुष्पादिवस्त्रकैः। तं पादपं समभ्यर्च्य गता गेहं नृपात्मजा ॥१०॥
 पाञ्चालोशोकवृक्षं च समालोक्य समर्चितम्। श्रुत्वा तद्वृत्तकं सर्वं हंहो जातं विरूपकम् ॥११॥
 इत्युक्त्वा तत्पुरं गत्वा नत्वा तं भूपतिं बुधः। तत्कन्यामन्दिराभ्यर्णो स्वस्थानं संगृहीतवान् ॥१२॥
 तत्र पश्चिमरात्रौ च वीणायाः सुस्वरं मुदा। गीतं चकार पाञ्चालो जनानां श्रुतिपेशलम् ॥१३॥
 श्रुत्वा गन्धर्वसेना सा गीतं चेतोनुरंजनम्। तदासक्ता ततो भूत्वा कुरंगीव प्रवेगतः ॥१४॥
 तत्सम्मुखं प्रगच्छन्ती प्रासादाद्भद्रसात्तदा। पपात भ्रान्तितः कष्टं मृत्वा दीर्घभवं गता ॥१५॥
 कन्याकर्णरसेन लम्पटमतिर्गन्धर्वसेना कुधीः सम्प्राप्ता भवसागरेति विषमे दुष्कर्मणा मज्जनम्।
 चित्ते चेति विचार्य दुःखजनकं पञ्चेन्द्रियाणां सुखं सन्तः श्रीजिनधर्मशर्मनिलयं नित्यं श्रयन्तु श्रिये ॥१६॥

इति कथाकोशे कर्णेन्द्रियाख्याने गन्धर्वसेनायाः कथा समाप्ता।

संदेह हुआ। एक विद्यार्थी से इसका कारण पूछा तो उसने एक स्त्री के आने और इस वृक्ष की पूजा कर उसके चले जाने का हाल पांचाल से कहा। पांचाल ने समझ लिया कि गन्धर्वसेना आकर चली गई तब उसने सोचा यह तो ठीक नहीं हुआ। सोने ने सब बना-बनाया खेल बिगाड़ दिया। खैर, जो हुआ, अब लौट जाना भी ठीक नहीं। चलकर प्रयत्न जरूर करना चाहिए। इसके बाद वह राजा के पास गया और प्रार्थना कर अपने रहने को एक स्थान उसने माँगा। स्थान उसकी प्रार्थना के अनुसार गन्धर्वसेना के महल के पास ही मिला। कारण राजा से पांचाल ने कह दिया था कि आपकी राजकुमारी गान में बड़ी होशियार है, ऐसा मैं सुनता हूँ और मैं भी आपकी कृपा से थोड़ी बहुत गाना जानता हूँ, इसलिए मेरी इच्छा राजकुमारी का गाना सुनकर यह बात देखने की है कि इस विषय में उसकी कैसी गति है। यही कारण था कि राजा ने कुमारी के महल के समीप ही उसे रहने की आज्ञा दे दी। अस्तु ॥९-१२॥

एक दिन पांचाल कोई रात के तीन चार बजे के समय वीणा को हाथ में लिए बड़ी मधुरता से गाने लगा। उसके मधुर मनोहर गाने की आवाज शान्त रात्रि में आकाश को भेदती हुई गन्धर्वसेना के कानों से जाकर टकराई गन्धर्वसेना उस समय भर नींद में थी। पर उस मनोमुग्ध करने वाली आवाज को सुनकर वह सहसा चौंक कर उठ बैठी। न केवल उठ बैठने ही से उसे सन्तोष हुआ बल्कि वह उठकर उधर दौड़ी और उधर गई जिधर से आवाज गूँजती हुई आ रहा थी। इस बे-भान अवस्था में दौड़ते हुए उसका पाँव खिसक गया और वह धड़ाम से आकर जमीन पर गिर पड़ी। देखते-देखते उसका आत्माराम उसे छोड़कर चला गया। इस विषयासक्ति से उसे फिर संसार में चिर समय तक रुलना पड़ा। गन्धर्वसेना एक कर्णेन्द्रिय के विषय की लम्पटता से जब अथाह संसार सागर में डूबी, तब जो पाँचों इन्द्रियों के विषयों में सदा काल मस्त रहते हैं, वे यदि डूबे तो इसमें नई बात क्या? इसलिए बुद्धिमानों का कर्तव्य है कि वे इन दुःखों के कारण विषयभोगों को छोड़कर सुख के सच्चे स्थान जिनधर्म का आश्रय लें ॥१३-१६॥

५०. भीमराजः कथा

नत्वाहं केवलज्ञान-लोचनं श्रीजिनेश्वरम्। वक्ष्ये भीमनृपाख्यानं सतां वैराग्यकारणम् ॥१॥
 कांपिल्यनगरे राजा भीमो भीमाशयः कुधीः। सोमश्रीर्भामिनी तस्यां भीमदासः सुतोभवत् ॥२॥
 कुलक्रमागतत्वाच्च नन्दीश्वरमहाविधौ। जीवघातनिषेधस्य दापिता तेन घोषणा ॥३॥
 तत्र तेनैव भीमेन मांसासक्तेन पापिना। सूपकारः स्वयं मांसं याचितो दुष्टचेतसा ॥४॥
 सोपि बालं श्मशानाच्च समानीय मृतं तदा। भूपतेस्तस्य संस्कृत्य ददौ भीमस्य पापिनः ॥५॥
 तद्भक्षणात्तदा भीमो जिह्वादुस्वादुलम्पटः। सूपकारं प्रति प्राह कस्मान्मृष्टमिदं वद ॥६॥
 लब्धाभयेन तेनापि प्रोक्ते तस्मिन्कुर्मणि। भीमो जगाद मे देहि तदेवं नरजंगलम् ॥७॥
 सूपकारस्तदा पापी लड्डुकादिप्रवञ्चनैः। नित्यमेकं कुधीर्बालं जनानां हन्ति तत्कृते ॥८॥
 यस्तु पापीजनो लोके संगतिस्तस्य तादृशी। यथा भीमस्य सम्पन्नः सूपकारोतिपापधीः ॥९॥

५०. भीमराज की कथा

केवलज्ञानरूपी नेत्रों की अपूर्व शोभा को धारण किए हुए श्रीजिनेन्द्र भगवान् को नमस्कार कर भीमराज की कथा लिखी जाती है, जिसे सुनकर सत्पुरुषों को इस दुःखमय संसार से वैराग्य होगा ॥१॥

कांपिल्य नगर में भीम नाम का एक राजा हो गया है। वह दुर्बुद्धि बड़ा पापी था। उसकी रानी का नाम सोमश्री था। इसके भीमदास नाम का एक लड्डुका था। भीम ने कुल-क्रम के अनुसार नन्दीश्वर पर्व में मुनादी पिटवाई कि कोई इस पर्व में जीवहिंसा न करें। राजा ने मुनादी तो पिटवा दी, पर स्वयं महा लम्पटी था। मांस खाये बिना उसे एक दिन भी चैन नहीं पड़ता था। उसने इस पर्व में भी अपने रसोइये से मांस पकाने को कहा। पर दुकानें सब बन्द थीं, अतः उसे बड़ी चिन्ता हुई वह मांस लाये कहाँ से? तब उसने एक युक्ति की। वह मसान से एक बच्चे की लाश उठा लाया और उसे पकाकर राजा को खिलाया। राजा को वह मांस बड़ा ही अच्छा लगा। तब उसने रसोइये से कहा-क्यों रे, आज यह मांस और दिनों की अपेक्षा इतना स्वादिष्ट क्यों हैं? रसोइये ने डरकर सच्ची बात राजा से कह दी। राजा ने तब उससे कहा-आज से तू बालकों का ही मांस पकाया करना ॥२-७॥

राजा ने तो झट से कह दिया कि अब से बालकों का ही मांस खाने के लिए पकाया करना पर रसोइये को इसकी बड़ी चिन्ता हुई कि वह रोज-रोज बालकों को लाये कहाँ से? और राजाज्ञा का पालन होना ही चाहिए। तब उसने यह प्रयत्न किया कि रोज शाम के वक्त शहर के मुहल्लों में जाना जहाँ बच्चे खेल रहे हों उन्हें मिठाई का लोभ देकर झट से किसी एक को पकड़ कर उठा लाना। इसी तरह वह रोज-रोज एक बच्चे की जान लेने लगा। सच है-पापी लोगों की संगति दूसरों को भी पापी बना देती है। जैसे भीमराज की संगति से उसका रसोइया भी उसी के सरीखा पापी हो गया ॥८-९॥